क्या तुमने कभी खेला है कट्टम-मोक्षपटम!

आजकल हर शाम पार्क में दोस्तों के साथ खेलने का तुम्हारा प्लान चौपट हो जाता है। न जाने कहां से आसमान में काले-काले बादल छा जाते हैं। बारिश में खेलोगे तो मम्मी से डांट पड़ेगी और घर में भला कितनी देर छोटा भीम और डोरेमॉन देखा जा सकता है। ऐसे में क्यों न तुम पचीसी और मोक्षपटम जैसे खेल खेलो। नाम पढ़ कर पड़ गए न चक्कर में। भला ये कौन-से खेल हैं! दरअसल, ये सैकड़ों साल पुराने भारतीय बोर्ड गेम्स हैं, जिन्हें आज तुम किसी और नाम से जानते हो। आज इनके बारे में जानते हैं शाश्वती से

पुराने तो हैं ही बेस्ट..

लूडो खेलो

लूडो एक पुराना गेम है। तुम्हारे मम्मी-पापा ने इसे बचपन में खेला होगा। तुम बाजार से इसे खरीद लाओ। ज्यादा महंगा नहीं होता।

फायदे:

मम्मी-पापा या भाई-बहन के साथ खेल सकते हो।

ग्रुप में खेल कर दोस्तों से अच्छा रिलेशन बना सकते हो। चोट लगने का डर भी नहीं।

इसमें गोटी की चाल को सोच-समझ कर चलना होता है, जिससे तुम्हारे दिमाग की कसरत होती है।

इसमें जीतता हुआ खिलाड़ी भी अंत तक आते-आते हार जाता है। पूरे खेल में रोमांच बना रहता है।

चेस तो ट्राई करो

भारत में शुरू हुआ यह खेल दिमाग के विकास के लिए काफी अच्छा है। घर बैठे इसे खेल कर इंटेलिजेंट बनोगे और बोर भी नहीं होगे।

फायदे:

कन्सन्ट्रेशन बढ़ता है। फोकस करना सीखते हो।

इमेजिनेशन का विकास होता है, जो भविष्य के बारे में सोचने की क्षमता को बढमता है। क्या सही क्या गलत, क्या करना सही रहेगा, यह सोचते हैं।

प्लानिंग, अनुशासन सीखते हो।

मैथ्स पर अच्छी पकड़ बनती है।

कैरम है मजेदार

कैरम भी पुराना गेम है। इसे तुम कम खेलते होगे, पर ये बड़ा फायदेमंद है।

फायदे:

तेज नजर और हाथों पर कंट्रोल होता है।

मैथ्स अच्छा होता है। आंख और हाथ का समन्वय सही रहता है।

पचीसी बन गया लूडो

पुराने जमाने के खेल पचीसी को आज तुम लूडो के नाम से जानते हो। लूडो, पचीसी का ही नया रूप है। पचीसी, हिंदी के पच्चीस शब्द से बना है। पचीसी के खेल में एक बार में कोई खिलाड़ी सबसे ज्यादा 25 अंक ला सकता है। इस खेल को कई देशों में

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

ट्वेंटी-फाइव के नाम से भी जाना जाता है। इस खेल को खेलने का एक और तरीका भी है, जिसमें तुम्हें सबसे ज्यादा 3 अंक मिल सकते हैं।

इस खेल के मामले में एक अनोखी बात भी है। बादशाह अकबर इस खेल को बिल्कुल बादशाही तरीके से खेलते थे। उनका राजदरबार ही लाल और सफेद स्चायर में बंटा हुआ था। यानी उनका पूरा राजदरबार ही पचीसी का बोर्ड था। राजदरबार के बीचोबीच पत्थर का एक बड़ा-सा बुत था, जो बोर्ड का सेंट्रल पॉइंट था। यही वो जगह थी, जहां अकबर और उनके दरबारी पचीसी का खेल खेलते थे। 16 सेवक, चार अलग-अलग रंग के कपड़े पहने गोटी का काम करते थे। आज का लूडो, चार खिलाडियों का खेल है। चार अलग-अलग रंग की गोटियों से यह खेल खेला जाता है।

सांप-सीढ़ी वाला मोक्षपटम

सांप और सीढ़ी की शुरुआत भी भारत में ही हुई। पुराने जमाने में इस खेल को मोक्षपटम कहा जाता था। यह भी डाइस बोर्ड गेम्स का ही हिस्सा है। मोक्षपटम धीरे-धीरे इंग्लैंड पहुंचा और वहां इसे स्नेक एंड लैडर्स के नाम से बेचा जाने लगा। इस खेल को एक साथ चार खिलाड़ी खेल सकते हैं। इस खेल में 1 से लेकर 1 तक के खाने बने होते हैं। बोर्ड पर ढेर सारे सांप और सीढियां होती हैं। सांप के काटने पर खिलाड़ी को सांप की पूंछ वाले खाने पर आना पड़ता है, वहीं सीढ़ी चढ़ कर खिलाड़ी कई खाने ऊपर भी पहुंच सकता है। इसमें सांप की संख्या, सीढियों से ज्यादा होती है।

चतुरंग बन गया है शतरंज

चतुरंग यानी शतरंज। इसे तुम चेस के नाम से भी जानते हो। ऐसा माना जाता है कि शतरंज का खेल भी लूडो और सांप-सीढ़ी की तरह सबसे पहले भारत में ही खेला गया। आज तुम इन सब खेलों को जिस रूप में खेल रहे हो, उसमें वक्त के साथ-साथ बदलाव आया है। चतुरंग संस्कृत के दो शब्दों से बना है, जिसका मतलब होता है- चार भाग। हाथी, घोड़ा, रथ और सिपाही चतुरंग के चार हिस्से होते हैं। यह खेल सफेद और काले रंग के बोर्ड पर खेला जाता था। आजकल तुम चेस का जो खेल खेलते हो, उसमें और चतुरंग के बीच की समानता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। तब चतुरंग का यह खेल कैसे खेला जाता था, इस बारे में अब तक किसी को कुछ खास पता नहीं है। पर शतरंज के इतिहास को जानने वालों का कहना है कि दोनों खेल के नियम मिलते-जुलते होते होंगे।

इस बारिश इन्हें भी आजमाओ

पिलो गेम

दोस्तों को घर बुलाओ और म्यूजिक चलाओ, तकिए को पास करो, जिस पर म्यूजिक रुका वो डांस करेगा, गाना सुनाएगा, किसी फिल्म का डायलॉग बोलेगा या जानवर की आवाज निकालेगा।

न्यूजपेपर में नाम ढूंढ़ो

इसमें दो-चार से ज्यादा दोस्त मिल कर भी खेल सकते हैं। इसमें एक खिलाड़ी ए, बी, सी, डी या अ, आ, ई, क, ख, ग बोलता है। दूसरा खिलाड़ी जब स्टॉप बोल देता है तो जो अक्षर आता है, न्यूजपेपर में उस एल्फाबेट से शब्द ढूंढ़ने पड़ते हैं। जो पहले पांच शब्द ढूंढ़ लेगा, वह स्टॉप बोल देगा और फिर जिसके जितने शब्द, उसके उतने नम्बर।

रिम में जॉब की कम नहीं

रिमोट इंफ्रास्ट्रक्टर मैनेजमेंट एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें तीन से चार लाख लोगों को नौकरियों मिल सकती हैं। इसके जरिए दूर बैठी कंपनियों को आईटी सपोर्ट जैसी सेवाएं मुहैया करायी जाती हैं। यदि आप इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के नये इनोवेशन रिम में कॅरियर तलाश रहे हैं, तो यहां आपके लिए जॉब की कोई कमी नहीं है।

क्या है रिम

आमतौर पर रिमोट इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट के तहत रिमोट लोकेशन पर स्थित कंपनियों कोआईटी इंफ्रास्ट्रक्चर, मॉनीटरिंग और मैनेजमेंट सपोर्ट से संबंधित सुविधाएं मुहैया करायी जाती है। रिम के जरिए दूर की कंपनियों के न केवल सर्वर पर नजर रखी जा सकती है, बल्कि उसे ऑफिस में बैठ कर ही शट-डाउन भी किया जा सकता है। इसके अलावा, सर्वर आदि में आयी किसी तरह की समस्या का समाधान भी बखूबी किया जा सकता है।

कैसे मिलेगी एंट्री

इस क्षेत्र में उन लोगों के लिए बेहतरीन मौका है, जिनके पास टेक्निकल डिप्लोमा, इलेक्ट्रॉनिक्स, साइंस या गणित में बीएसएसी या बीसीए, एमसीए, बीटेक और बीई जैसी डिग्रियां हैं। साथ ही, इस फील्ड में एंट्री करने वाले कैंडिडेट्स में डोमिन, प्रॉसेस, टेक्नोलॉजी, पीपल मैनेजमेंट आदि जैसे गुण जरूर होने ही चाहिए। इस क्षेत्र में सफल होने के लिए तीन चीजें काफी महत्वपूर्ण हैं- स्किल्स, स्केल और डोमिन। इनके अलावा, नवीनतम सॉफ्टवेयर, ऑटोमेशन टेक्नोलॉजी और आईटी इंफ्रास्ट्रक्चर लाइब्रेरी पर आधारित प्रक्रिया ढांचों से संबंधित अपने ज्ञान को न सिर्फ तरोताजा रखना पडता, बल्कि उसमें लगातार इजाफा भी करना पडता है। सच तो यह है कि स्केल और साइज को देखते हुए रिम काफी चैलेंजिंग करियर है, इसलिए आपको विभिन्न क्षेत्र में डोमिन एक्सपर्ट बनना होगा। उदाहरण के तौर पर, यदि आप यूनिक्स एक्सपर्ट हैं, तो आपकी कोशिश यही होनी चाहिए कि आप विंडो या डाटाबेस में भी एक्सपर्ट हो।

इंडियन रिम मार्केट

नैस्कॉम की एक रिपोर्ट के मुताबिक, रिम का ग्लोबल मार्केट करीब 96 से 14 बिलियन डॉलर है। दुनिया भर में फैले रिम के बाजार से भारत के पास वर्ष 213 तक 26 से 28 बिलियन डॉलर के कारोबार को खींचने की क्षमता हो सकती है।

फिलहाल इस क्षेत्र में कई प्रमुख आईटी कंपनियां काफी सक्रिय हैं, जिनमें विप्रो, इंफोसिस, टीसीएस, एचसीएल, माइंडट्री, एचपी, पटनी, ईडीएस, आईबीएम, कॉग्निजंट, एचपी, सीएससी, एक्सेंचर आदि जैसी कंपनियां शामिल हैं।

ऊन देने वाला खरगोश!

सफेद रंग के खरगोश इतने प्यारे लगते हैं कि मन करता है उन्हें पाल ही लें। ये बड़े भोले होते हैं। पर क्या तुम जानते हो कि दुनिया में ऐसे खरगोश भी पाए जाते हैं, जो ऊन देते हैं? आज इन्हीं के बारे में तुम्हें बता रही हैं सरिता कुमारी

अंगोरा रेबिट को लंबे और मुलायम बालों के लिये जाना जाता है। इनके बालों से बहुत सारी चीजें बनायी जाती हैं। ये खरगोश बड़े शर्मीले होते हैं। 18वीं शताब्दी में फांस के राजशाही परिवारों में अंगोरा बिल्ली, बकरी और खरगोश को शौकिया तौर पर पाला जाता था। पर इस शताब्दी के अंत तक आते-आते इन्हें यूरोप के कई हिस्सों में पाया जाने लगा। अंगोरा नस्ल के इन खरगोशों के बाल बहुत ही मुलायम और सिल्की होते हैं। ये बाल 11 इंच तक लंबे होते हैं। इनका मुंह भी बालों से ढका होता है। सभी खरगोशों की तरह ये भी घास खाना ही पसंद करते हैं।

यह फाइबर युक्त खाना पसंद करते हैं, क्योंकि ऐसा भोजन इनके बालों के लिये बहुत फायदेमंद होता है। दूसरे जानवरों की तरह इन खरगोशों को एलर्जी नहीं होती। अगर इनकी खास देख-रेख की जाये तो ये 7 से 12 साल की उम्र तक जीवित रह सकते हैं। बाहर जंगल में रहने वाले खरगोश ज्यादा जी नही पाते, क्योंकि इस प्रजाति को खास देखभाल की जरूरत होती है। एक प्रजाति, जिसे साटिन अंगोरा कहा जाता है, उसके बाल छोटे होते हैं और आसानी से उतारे जा सकते हैं। इनके खाने का भी विशेष ख्याल रखा जाता है, क्योंकि अगर इनका पेट खराब हो जाता है तो इनके बाल भी झड़ सकते हैं। इनके बालों के लिये संतुलित खाना बहुत जरूरी है।